...पूरी है। यह भी दोपहर में पानी छोड़ा जा रहा है। ...

होने से परेशान हैं। पेयजल किल्लत ... रहा है।

अमर उजाला कानपुर देहात 15/09/2026

पराली न जलाएं, सड़ाकर खाद बनाएं

कानपुर देहात। दिलीप नगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में सोमवार को फसल अवशेष प्रबंधन पर पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण शुरू हुआ। कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि पराली जलाने से वातावरण में प्रदूषण होता है। पराली जलाएं नहीं बल्कि सड़ाकर खाद बनाएं। इससे मिट्टी की सेहत सुधरती है। फसल लागत कम होने के साथ उत्पादन भी बढ़ता है।

प्रशिक्षण में कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत जानकारी दी। उत्तर प्रदेश एवं भारत सरकार द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन के लिए उपलब्ध कृषि यंत्रों पर मिलने वाली छूट के बारे में बताया गया। उन्होंने कहा कि फसल अवशेष जलाने से मानव स्वास्थ्य, मृदा स्वास्थ्य और पर्यावरण पर दुष्प्रभाव पड़ते हैं। फसल अवशेषों से विभिन्न उत्पाद बनाने और मशरूम की गुणवत्ता युक्त खेती करने के बारे में बताया गया। यहां शुभम यादव, दिव्यांश, भगवान पाल सहित 25 से अधिक किसान उपस्थित रहे। (संवाद)

कार्यक्रम को सम्बोधित करते डॉ. खलील खान।

फसल अवशेष प्रबंधन पर पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण हुआ प्रारंभ

(आज समाचार सेवा)

कानपुर, 14 सितम्बर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर में फसल अवशेष प्रबंधन विषय पर पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने प्रतिभागी किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत जानकारी दी गई। उन्होंने कहाकि फसल अवशेषों को जलाना या खेतों से हटाना नहीं चाहिये। बल्कि फसल अवशेष खेतों की मिट्टी में मिलकर उसकी उर्वरता को बढ़ाते है। इसके साथ ही खेतीबाड़ी में फसलों की विविधता पर बल दिया जाता है, ताकि मिट्टी की उर्वरकता बढ़ने के साथ फसलों की पैदावार भी बढ़ सके। उत्तर प्रदेश एवं भारत सरकार द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन के लिए उपलब्ध कृषि यंत्रों पर मिलने वाली छूट के बारे में बताया गया। राज्य सरकार भी कृषि संबंधी उपकरणों पर सब्सिडी देती है, जिसका किसानों को सीधा लाभ पहुंचता है। फसल अवशेष जलाने से मानव स्वास्थ्य, मृदा स्वास्थ्य और पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों की जानकारी दी गई। फसल अवशेषों से विभिन्न उत्पाद बनाने और मशरूम की गुणवत्ता युक्त खेती करने के बारे में बताया गया। इस अवसर पर शुभम यादव,दिव्यांश तथा श्री भगवान पाल सहित 25 से अधिक किसान उपस्थित रहे।

सत्य के साथ
हर कदम
जनहित में

सत्य का असर समाचार पत्र

कानपुर

सही खबर
सही विश्लेषण
सशक्त समाज

कानपुर नगर | मंगलवार, 15 सितंबर 2026 | सत्य का असर समाचार पत्र

फसल अवशेष प्रबंधन पर पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण हुआ प्रारंभ

कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर में चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कार्यक्रम का शुभारंभ

कृषि वैज्ञानिक डॉ. खलील खान किसानों को प्रशिक्षण देते हुए।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित किसान एवं कृषि वैज्ञानिक।

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर में फसल अवशेष प्रबंधन विषाय पर पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा की गई, जिसमें कृषि वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, उत्तर प्रदेश एवं भारत सरकार की कृषि यंत्रों पर मिलने वाली छूट, अवशेष जलाने से मानव स्वास्थ्य, मृदा स्वास्थ्य और पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव, फसल अवशेषों से विभिन्न उत्पाद बनाने तथा गुणवत्तायुक्त मशरूम खेती की विस्तृत जानकारी दी।

डॉ. खलील खान ने बताया कि फसल अवशेषों को जलाने के बजाय उनके उचित प्रबंधन से न केवल पर्यावरण सुरक्षित रहता है, बल्कि किसानों की आय में भी वृद्धि होती है। अवशेषों से जैविक खाद, पशु आहार, बायोएनर्जी जैसे विभिन्न उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं। उन्होंने बताया कि मशरूम खेती एक लाभकारी एवं कम लागत वाली कृषि गतिविधि है, जिसे किसान अपना कर अविरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं।

इस अवसर पर शुभम यादव, दिव्यांश, श्री भगवान पाल सहित 25 से अधिक किसान उपस्थित रहे और प्रशिक्षण का लाभ लिया।

प्रशिक्षण की प्रमुख बातें

- फसल अवशेष प्रबंधन की वैज्ञानिक विधियाँ।
- कृषि यंत्रा पर केंद्र व राज्य सरकार की छूट की जानकारी।
- अवशेष जलाने के दुष्प्रभाव – मानव स्वास्थ्य, मृदा स्वास्थ्य व पर्यावरण।
- फसल अवशेषों से विभिन्न उत्पाद बनाने की संभावनाऐं।
- गुणवत्तायुक्त मशरूम खेती की जानकारी।

“अवशेषों का सही प्रबंधन ही भविष्य की समृद्धि है”

पत्रकार जितेंद्र कुमार सिंह पटेल
संपर्क सूत्र 9956 8340 16

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 18 अंक : 77 कानपुर, मंगलवार 15 सितम्बर 2026 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

फसल अवशेष प्रबंधन पर पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण आरंभ

कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर में फसल अवशेष प्रबंधन विषय पर पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।इस प्रशिक्षण में कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर खलील खान ने प्रतिभागी किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत जानकारी दी गई। उत्तर प्रदेश एवं भारत सरकार द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन के लिए उपलब्ध कृषि यंत्रों पर मिलने वाली छूट के बारे में बताया गया। फसल अवशेष जलाने से मानव स्वास्थ्य, मृदा स्वास्थ्य और पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों की जानकारी दी गई। फसल अवशेषों से विभिन्न उत्पाद बनाने और मशरूम की गुणवत्ता युक्त खेती करने के बारे में बताया गया। इस अवसर पर शुभम यादव,दिव्यांश तथा भगवान पाल सहित 25 से अधिक किसान उपस्थित रहे।

अमर उजाला कानपुर 15/09/2026

कृषि अवशेषों से हो सकती मशरूम की खेती

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के दिलीपनगर स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में सोमवार को फसल अवशेष प्रबंधन पर पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण शुरू हुआ। कृषि वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने किसानों को फसल अवशेषों के प्रबंधन के विभिन्न तरीकों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अवशेषों से विभिन्न उपयोगी उत्पाद तैयार करने के साथ मशरूम की खेती की जा सकती है। शुभम यादव, दिव्यांश और भगवान पाल समेत 25 से अधिक किसान मौजूद रहे। (संवाद)